लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंक : बतीसवाँ सितम्बर 2020

सह्याद्री

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय
सी-२५, ऑडिट भवन , बांद्रा-कुर्ला संकुल , बांद्रा(पूर्व) , मुंबई-400051

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय

सी-२५, ऑडिट भवन , बांद्रा-कुर्ला संकुल , बांद्रा(पूर्व) , मुंबई-400051

टिप्पणी

इस अंक में रचयिताओं द्वारा व्क्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं हैं।विचारों व लेखन की मौलिकता संबंधित पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की स्वयं की है । रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार संपादक मडंल में निहित होंगे ।

संरक्षक

श्री के.पी.यादव

प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा(के), मुंबई

प्रकाशन

सहयाद्री (हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (कें) का कार्यालय

मुंबई –400051, महाराष्ट्र

प्रधान संपादक

सुश्री रचना जयपाल सिंह

उपनिदेशक/राजभाषा

मुख्य संपादक

सुश्री पूर्णिमा.एस

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

सुश्री जया नायर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

सुश्री वाणी विशालाक्षी

वरिष्ठ.अनुवादक/राजभाषा

श्री राहुल कुमार वर्मा

कनिष्ठ.अनुवादक/राजभाषा

कवर पृष्ठ: वृद्धि विकास परब

(सौ. विनया विकास परब, पर्यवे क्षक आ.प्रा.ले.प./आर.पी.एस.).

अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषय		पृ.सं
1	गृह मंत्री का संदेश		6
2	भारत के नियंत्रक एवं महालेखाकार का परिचय		7
3	उप महानियंत्रक एवं लेखापरीक्षक का संदेश		8
4	उप महानियंत्रक एवं लेखापरीक्षा (केंद्रीय राजस्व) का संदेश		9
5	संरक्षक की कलम से		10
6	प्रधान संपादक की कलम से		11
7	आपके पत्र		13
8	सुझाव		14
9	स्वतंत्रता दिवस 2020-की झलकियाँ		16
10	हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ		19
11.	कोविड जाँच-शिविर की कुछ झलकियाँ		20
रचनाएँ			
क्र.सं	विषय	रचनाकार	
12	प्रेमचंद	श्री के.पी.यादव (प्रधाननिदेशक)	21
13	कब तक चुपचाप रहूँ	श्री के.पी.यादव(प्रधाननिदेशक)	22
14	अनमोल वचन	सुश्री नविता यादव	23
15	हिंदी	सुश्री रचना जयपाल सिंह (उपनिदेशक)	25
16	पेंटिंग	सुश्री पूर्णिमा एस	27
17	आओ हिंदी दिवस मनाएँ	श्री रंजय कुमार सिंह	28
18	प्रेरणादायक सुविचार	सुश्री रचना जयपाल सिंह (उपनिदेशक)	30
19	विपरीत परिस्थितियों में भी साहसी जवान	सुश्री अर्चना प्रजापति	31
20	कोविड 19-एक वैश्विक महामारी या सीख	सुश्री अर्चना प्रजापति	32
21	नयी शुरुआत	श्री अंकुश बने	33
22	कोरोना क्या है? क्या हे कोरोना ?	श्री अंकुश बने	34
23	मतभेद	सुश्री वाणी विशालाक्षी	35
24	माँ	श्री राहुल कुमार वर्मा	38
25	घर	श्री राहुल कुमार वर्मा	39
26	वो विष्णु मैं विषाणु	सुश्री रीता सिन्हा	40

अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषय	रचनाकार	पृ.सं
27	क्यों कहता है इंसान	श्री राकेश कुमार सिंह	42
28	माँ तो बस माँ होती है	श्री गौरव कुमार	43
29	भोजन और जीवन	श्री राकेश कुमार सिंह	44
30	बदलता जमाना	श्री बलराम राणा	45
31	पेंटिंग	श्रीमती ममता	46
32	सेना में जवान ,खेतो में किसान...	श्री बलराम राणा	47
33	कलसुबाई शिखर ट्रेक यात्रा वृतांत	श्री आदित्य कुमार	48
34	मैं जो चाहता हूँ	श्री कुमार सौरभ	50
35	पिता का जीवन	श्री राकेश रौशन	51
36	आपबीती	श्री कुमार सौरभ	52
37	रिक्शावाला	सुश्री मनीषा कदम	53
38	पेंटिंग	स्वर्णिम पुत्र/सुश्री रीता सिन्हा	55
39	दो जून की रोटी	श्री राकेश रौशन	56
40	पेंटिंग	कु .अद्विका,सुपुत्री /सुश्री सीमा हिरबेट	57
41	शहर	श्री राजीव	58
42	लॉकडाउन में आयोजित प्रशिक्षण		60
43	लॉकडाउन में आयोजित परीक्षाएँ		61
44	सेवानिवृत्तियाँ		62
45	श्रद्धांजलि		63
46	मुखपृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ पर टिप्पणी		64
47	अंतिम पृष्ठ	कु.वृद्धि ,पुत्री/ श्रीमती विनय विकास परब	65

गृह मंत्री का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है। कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं - अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू

भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने 8 अगस्त 2020 को भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के रूप में पद ग्रहण किया।इससे पहले, श्री मुर्मू केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के पहले उपराज्यपाल थे। जम्मू और कश्मीर जाने से पहले,श्री मुर्मू ने भारत सरकार में विभिन्न क्षमताओं में सेवा की, जैसे व्यय विभाग के सचिव, वित्तीय सेवा विभाग में विशेष और अतिरिक्त सचिव। केंद्र में अपने कार्यकाल से पहले, श्री मुर्मू ने गुजरात राज्य सरकार में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनके पास प्रशासनिक, आर्थिक और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में व्यापक अनुभव है। श्री मुर्मू उत्कल विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर हैं। उन्होंने बर्मिंघम विश्वविद्यालय से एमबीए की डिग्री प्राप्त की है। वह 1985 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा गुजरात कैडर के हैं। श्री मुर्मू का जन्म 21 नवंबर 1959 को ओडिशा के मयूरभंज जिले में हुआ था। उनका विवाह डॉ। स्मिता मुर्मू से हुआ है। उनकी एक बेटी रुचिका मुर्मू और एक बेटा रूहान मुर्मू है।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), मुंबई का कार्यालय

सुश्री सरोज पुनहानि
(उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक)
संदेश

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंबई के कार्यालय की राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका 'सह्याद्रि' के 32 वे अंक का प्रकाशन एक अत्यंत हर्ष का विषय है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी की उन्नति एवं उत्तरोत्तर विकास हेतु एक कारगर प्रयास साबित होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी सराहनीय भूमिका निभाने के साथ ही कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों तथा पत्रिका के सभी पाठकों को हिंदी लेखन के प्रति प्रोत्साहित करेगी।

मुझे यह सूचित करते हुए गर्व है कि हिंदी भाषा अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भी अपना पैर जमा चुकी है। हिंदी विश्व के अन्य देशों में भी बोली जा रही है। इसमें नेपाल, मॉरीशस, फीजी, ट्रिनीडाड, टोबैगो, सिंगापुर, अमेरिका, सूरीनाम एवं युगांडा प्रमुख है। फीजी की तीन शासकीय भाषाओं में से हिंदी एक है।

अतः हिंदी भाषा का प्रयोग एक संवैधानिक दायित्व के साथ-साथ भारतीय अस्मिता की पहचान भी है।

कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी हिंदी भाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु जागरूक रहकर राजभाषा हिंदी की प्रगति हेतु निरंतर प्रयासरत रहेंगे ऐसी आशा के साथ अंत में मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन की बधाई देती हूँ।

सरोज पुनहानि

(सुश्री सरोज पुनहानि)

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय,मुंबई

सुश्री मीनाक्षी गुप्ता
उप महानियंत्रक एवं लेखापरीक्षक (केंद्रीय राजस्व)

प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), मुंबई के कार्यालय की राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका 'सह्याद्रि' के 32 वे अंक के प्रकाशन के बारे में जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है । देश के संविधान के अनुसार हिंदी में काम करने और उसके प्रचार-प्रसार को बढावा देने की इसी कडी में इस पत्रिका का प्रकाशन एक अत्युत्तम प्रयास है।

भाषा व्यक्ति को उसकी संस्कृति के साथ जोड़ती है। आज देश के प्रत्येक भाग में हिंदी बोलने और समझने वाले मिल जाते हैं। हम भारतवासियों के साथ विदेशियों की भी हिंदी भाषा में रुचि बढ़ रही है। हिंदी को दिन- प्रतिदिन नए आयाम मिल रहे हैं और हिंदी जन-जन की भाषा बन रही है।

हम सबका संवैधानिक दायित्व है कि हम अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। हिंदी में काम-काज व्यक्तिगत विकास के साथ साथ जन-साधारण तक पहुँचने का एक सशक्त माध्यम भी है।

सह्याद्री के प्रकाशन से जुड़े समस्त लोगों एवं रचनाकारों को बधाई देती हूँ। मैं अपनी शुभकामनाओं के साथ इस पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

मीनाक्षी गुप्ता

(सुश्री मीनाक्षी गुप्ता)

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय(मुंबई)

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे अपने कार्यालय की ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 32 वें अंक को पाठकों के करकमलों में प्रस्तुत करते हुए आपार हर्ष की अनुभूति हो रही है ।

राजभाषा हिंदी राष्ट्र की वाणी है । राष्ट्रीय एकता की पहचान है । हिंदी एक सरल एवं सहज भाषा है । देश की बहुसंख्यक जनता को एक सूत्र में बाँधने के साथ-साथ आत्माभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व पटल पर हिंदी को बहुआयामी प्रासंगिकता प्राप्त है । अब केवल हिंदी भारत की नहीं ,विश्व की भाषा बन चुकी है । इसे दिल से स्वीकारकर हमने हृदय से प्रयास किया है कि पत्रिका राजभाषा हिंदी की प्रगति का प्रतीक बन सके ।

कोरोनावायरस की स्थिति विकट है लेकिन भयावह स्थिति को सकारात्मक तरीके से देखने एवं दृढता के साथ संभालने की आवश्यकता है। इस पत्रिका के माध्यम से चनात्मक उद्देश्यों के लिए इन प्रतिकूल क्षणों का उपयोग करने का प्रयास किया गया है। इसी दृष्टिकोण का प्रतिफल है हमारी ई-पत्रिका ।

यह ई-पत्रिका कार्यालय स्तर पर राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने एवं हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सृजनात्मक प्रतिभाओं को विकसित करते हुए राजभाषा के प्रचार प्रसार भी को आगे बढ़ाने का एक प्रयास है । मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयास की प्रशंसा करता हूँ और इस अंक की सफलता की कामना करता हूँ ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

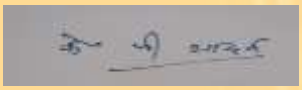

श्री के.पी.यादव

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय(मुंबई)

संदेश

हिंदी दिवस पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ । मुझे अपने कार्यालय की ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 32 वें अंक का विमोचन करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है ।

कोशिश कामयाबी की पहली सीढ़ी है। निरंतर प्रयास सदैव कामयाबी के शिविर की तरफ से जाते हैं । इस प्रयास का उदाहरण है हमारे कार्यालय की ई-पत्रिका " सहयाद्री " राजभाषा का प्रकाशन सबसे सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम है ।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है । कवि सुमित्रानंदन पंत के अनुसार हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति की सरलतम स्रोत है । इस पत्रिका में सरल एवं सहज भाषा के लेखों आलेखों का संलग्न किया गया है । आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। हमने प्रयास किया है कि पत्रिका , आकर्षक और संवैधानिक मूल्यों की संवाहक बने ।

सुधि पाठकों की प्रतिक्रियाएँ व सुझावों का स्वागत है जो हमें निरंतर बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। मैं पत्रिका के संपादन मंडल द्वारा किए योगदान की सराहना करती हूँ और इसकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

रचना जयपाल सिंह
उपनिदेशक (प्रशासन)

आपके पत्र

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपूर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया, उसने ईश्वर को मूर्तिमान कर लिया – विनोबा भावे

आपका आज का पुरुषार्थ आपका कल का भाग्य है – पालशिरू

टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए

मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए

शब्दों के लिए अटकीये नहीं

अशुध्दियों से घबराइए नहीं

अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए

स्वतंत्रता दिवस 2020

15.08.2020 के ध्वजारोहण के अवसर पर माननीय प्रधान निदेशक, प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं उपनिदेशक

सुश्री रचना जयपाल सिंह , उपनिदेशक (प्रशासन) द्वारा उद्बोधन

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा द्वारा उद्बोधन

स्वंतंत्रता दिवस 2020

स्वतंत्रता दिवस 2020 के अवसर पर धवजारोहण करते हुए माननीय प्रधान निदेशक, प्रधान निदेशक (वाणिज्यिक लेखापरीक्षा) महोदया

15.08.2020 के ध्वजारोहन के अवसर पर कर्मचारीगण

हिंदी पखवाड़ा 2020 का उद्घाटन समारोह

दीप प्रज्वलन करते हुए प्रधान निदेशक महोदय

मंच पर विराजमान प्रधान निदेशक महोदय एवं अन्य समूह अधिकारीगण

हिंदी पखवाडा 2020 के उद्घाटन समरोह में समूह अधिकारीगण द्वारा दीप प्रज्वलन

हिंदी पखवाडा 2020 के उद्घाटन समरोह में प्रधान निदेशक (प्रशासन) द्वारा उद्बोधन

हिंदी पखवाडा 2020 के उद्घाटन समरोह में सुश्री रचना जयपाल सिंह, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा उद्बोधन

प्रस्तोता

गीत गायन प्रतियोगिता -निर्णायक मंडल

प्रश्न मंच प्रतियोगिता – निर्णायक मंडल

<u>गीत गायन प्रतियोगिता</u>

माननीय प्रधान निदेशक के द्वारा मधुर संगीत की प्रस्तुति

गीत गायन प्रतियोगिता के प्रतिभागीयों एवं आनंद लेते श्रोतागण

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

कोविड-जाँच शिविर

कर्मचारियों और अधिकारियों के कल्याण हेतु 22.09.2020 एवं 23.09.2020 को कार्यालय में आयिजित कोविड-जाँच शिविर की कुछ झलकियाँ

प्रेमचंद

अगर आपने भारतीय साहित्य को पढ़ा और प्रेमचंद से अछूते रहे फिर यह कहा जाएगा कि आप समुद्र-तट तक गए और पानी ही न देखा। प्रेमचंद साहित्य की धारा के रस हैं जिनके बिना उसके पान में कोई स्वाद नहीं रह जाता। गोदान, गबन, निर्मला, कर्मभूमि, मानसरोवर जैसी किताबें देने वाले प्रेमचंद न सिर्फ़ हिंदी बल्कि उर्दू में भी लेखन किया करते थे।

प्रेमचंद लेखनी के जादूगर थे । कहानी गढ़ना उनके बाएँ हाथ का खेल था । "नमक का दारोगा" हो या 'ईदगाह' आज भी भारतीय मानस पटल पर विद्यमान हैं । पूस की रात में वे तारों को भी सर्दी का अहसास करा देते हैं । कहानी कै साथ-साथ प्रेमचंद ने उपन्यास के माध्यम से उत्तर भारत का एक अद्भूत चित्र प्रस्तुत किया है । गोदान को उत्तर भारतीय समाज का महाकाव्य कहा जाता है । प्रेमचंद की लेखनी से उत्पन्न कुछ अनमोल कथ्य अग्रलिखित है :

- सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं
- चिंता रोग का मूल है...।"
- "लगन को कांटों का परवाह नहीं होती...।"
- "बल की शिकायतें सब सुनते हैं, निर्बल की फरियाद कोई नहीं सुनता।"
- "जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरुरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है हमारी सेवा भाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागृत नहीं हुई तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।"
- "यश त्याग से मिलता है, धोखाधड़ी से नहीं" ।
- "विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला" ।
- "डरपोक प्राणियों में सत्य भी गूंगा हो जाता है।"
- "हम जिनके लिए त्याग करते हैं, उनसे किसी बदले की आशा ना रखकर भी उनके मन पर शासन करना चाहते हैं। चाहे वह शासन उन्हीं के हित के लिए हो। त्याग की मात्रा जितनी ज्यादा होती है, यह शासन भावना उतनी ही प्रबल होती है।"
- "जो प्रेम असहिष्णु हो, जो दूसरों के मनोभावों का तनिक भी विचार न करे, जो मिथ्या कलंक
- आरोपण करने में संकोच न करे, वह उन्माद है, प्रेम नहीं।"

माननीय प्रधान निदेशक के द्वारा लेख

कबतक चुपचाप रहूँ ?

मैनें तूझे जन्म दिया, तूने मुझे बाजार दिया
कौन सी जुल्म की बात कहूँ,
शोषण की कौन सी दास्तान कहूँ।
जब जी चाहा कुचला तुमने, कई अनकहे अत्याचार किया।

पहले धर्म के नाम पर सूली चढ़ाया मुझे,
आज संविधान होते हुए भी आग में जलाया मुझे।
कबतक चुपचाप रहूँ?

तूझे चोट लगी तो ये शोषण है,
मैं जली तो ये ट्रेडिशन है।

अगर यही ट्रेडिशन है तो इन्कार है,
अगर समाज की रीत है तो इसे धिक्कार है।
मेरा भी कुछ अधिकार है,
कबतक चुपचाप रहूँ?

श्री के. पी. यादव, प्रधाननिदेशक

अनमोल वचन

मानव जाति की सबसे बड़ी पूंजी भौतिक संपत्ति नहीं हैं बल्कि महान पुरुषों के मूल्यवान विचार हैं। ये विचार मन के दरवाजों पर दस्तक देते हैं। मैंने इन गहनों को इंटरनेट सहित विभिन्न स्रोतों से एकत्र किया है और आपको भेंट कर रहा हूँ।

- ✓ महापुरूषों के जीवन हमें याद दिलाते हैं कि हम अपने जीवन को उदान्त बना सकते हैं ,जो समय की रेत पर अपने पैरों के निशान छोड़ जाते हैं।

  ✓ -हेनरी लाँगफेलो

- ✓ यदि आप कुछ कहना चाहते हैं तो एक आदमी से पूछें, यदि आप कुछ करना चाहते हैं तो एक महिला से पूछें।

  ✓ -मार्गरिट थैचर

- ✓ हम प्रत्येक को अवगत करायें कि वे हमारी शुभकामना चाहते हों अथवा हमारी बुराई ,हम स्वतंत्रता)liberty) के अस्तित्व एंव सफलता के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तत्पर हैं , किसी भी बोझ को सहन करने के लिए तैयार हैं ,किसी भी कठिनाई को उठाने के लिए तैयार हैं। स्वतंत्रता की रक्षा हेतु हम किसी भी दोस्त का समर्थन करने को तैयार हैं तथा किसी भी दुश्मन की विरोध करने के लिए सजग हैं।

  - -जेके एफ कैनेडी

- ✓ कल्पना ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

  - -अल्बर्ट आइंस्टीन

- ✓ प्रकृति ने कभी उस दिल को धोखा नहीं दिया जो उससे प्यार करता था।

  ✓ -वर्डसवर्थ

- ✓ भीड़ का अनुसरण करने वाली महिला आम तौर पर भीड़ से आगे नहीं बढ़ पाएगी। अकेले चलने वाली महिला संभव है कि उन रास्तों को तय कर सकती है जिस पर कोई पहले चला न हो।

  -अल्बर्ट आइंस्टीन

- ✓ अगर आप एक वयक्ति को पढ़ाते हैं तो आप एक वयक्ति को शिक्षित करते हैं अगर आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।

○ -ब्रिघम यंग

▪ -

- ✓ एक महिला एक चाय बैग की तरह है ,आप कभी नहीं जानते हैं कि वह गर्मपानी में कितना मजबूत है।

✓ -एलेनोर रोजवल्ट

- ✓ समाज को बदलने को सबसे तेज तरीका दुनिया की महिलाओं को जुटाना है।

✓ -चार्ल्स मलिक

- ✓ जब पुरुषों पर अत्याचार होता है तो यह एक त्रासदी है। जब महिलाओं पर अत्याचार होता है तो यह एक परंपरा है।

✓ -कॉटिन पोग्रेबिन

- ✓ महिलाएं दुनिया में प्रतिभा का सबसे बडा अप्रयुक्त भंडार हैं।

✓ -हिलेरी क्लिंटन

- ✓ आप असहमत हुए बिना असहमति प्रकट कर सकते हैं।

✓ -जस्टिस रूथ बेडर जिन्सबर्ग

- ✓ आप उन चीजों के लिए लड़े जिनकी आप परवाह करते हैं लेकिन इसे इस तरह से करें कि दूसरों को आपस से जुड़ने के लिए प्रेरित करें।

- जस्टिस रूथ बेडर जिन्सबर्ग

- ✓ वास्तविक परिवर्तन ,स्थायी परिवर्तन एक समय में एक कदम होता है।

- जस्टिस रूथ बेडर जिन्सबर्ग

सुश्री. नविता यादव

पत्नी श्री के.पी.यादव(प्रधाननिदेशक)

हिंदी है माथे की बिन्दी, माँ के अचल सुहाग की।
हमको शिक्षा देती है जो, समता और अनुराग की।।

भारत की सब भाषाएँ, मोती-मणिक-पुखराज है।
विविध रूप होकर भी, सब सरगम की आवाज है।।
सारी भाषाएँ एक साथ, शोभा माता के ताज की।

हिंदी है माथे की.....

इसे किसी से द्वेष नहीं, यह सबकी हमजोली है।
इसे थोपना जो कहते हैं, राजनीति की होली है।
बच्चे इसे पढें चाव से, धुन बने सुरीले राग की।।

हिंदी है माथे की.....

राज की भाषा हिंदी को, हिंदीतर ने ही बनाया है।
सबने इसे देख सरलतम, इसीलिए अपनाया है।
लेकिन अब वे लोग कहाँ, थी जिनकी चाह स्वराज की।

हिंदी है माथे की.....

यदि भारत के जन-जन में, समता लानी तुम चाहो।
छोड सहारा अंग्रेजी का, सब हिंदी को अपनाओ।
निज क्षेत्र में अपनी भाषा, हिंदी केन्द्र-राज की।

हिंदी है माथे की.....

हिंदी से है बैर तुम्हें, अंग्रेजी तुम को प्यारी है।
चिन्ह गुलामी का अंग्रेजी, माँ की सौत तुम्हारी है।
स्वभाषा तो उन्हें चाहिए, गैरत हो माँ की लाज की।।

हिंदी है माथे की.....

स्वतन्त्र यदि कहलाते हो, तो अपनी भाषा को लाओ।
अंग्रेजी कलंक गुलामी का, मस्तक से इसे छुडाओ।
विकल्प नहीं हिंदी का, ये घोषणा है सुभाष की।।
हिंदी है माथे की बिन्दी, माँ के अचल सुहाग
हमको शिक्षा देती है जो, समता और अनुराग की।।

श्रीमती रचना जयपाल सिंह

उपनिदेशक/ राजभाषा एवं प्रशासन

हर तूफान आपकी तन्मयता की परीक्षा है

सुश्री पूर्णिमा स
व.ले.प.अ/ राजभाषा एवं प्रशासन

ठोकर लगती है और दर्द होता है तभी मनुष्य सीख पाता है – महात्मा गांधी

आओ हिंदी दिवस मनाएँ

आओ, हिंदी दिवस मनाएँ।

चतुर्दिक हिंदी अलख जगाएँ।।

हिंदी-ध्वी गूँजे चहुँओर।

बने हिंदी विश्व भाषा सिरमौर।।

स्व मानस में हिंदी दीप जलाएँ।

आओ, हिंदी दिवस मनाएँ।।

हिंदी भारतीय संस्कृति की रक्षिका।

भारत-गौरव की हे पोषिका।।

हिंदी ध्वज विश्व भर फुहराएँ।

आओ, हिंदी दिवस मनाएँ।।

हिंदी में मिसरी की मिठास।

इसमें है जन-जन की आस।।

अभिलाषा पूर्ण करके बतलाएँ।

आओ, हिंदी दिवस मनाएँ।।

हिंदी है हम सबको आता।
इससे है सदियों का नाता।।
इस बंधन को अटूट बनाएँ।
आओ, हिंदी दिवस मनाएँ।।

है हिंदी, सद्भाव ममता की गंगा।
उठती नित शांति मैत्री की तरंगा।।
हम भारतीय सब में शुभ चेतना जगाएँ।
आओ, हिंदी दिवस मनाएँ।।

श्री रंजय कुमार सिंह, आकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

समय और शब्द दोनों का, प्रयोग लापरवाही से ना करें, क्योंकि ये दोबारा ना आतें है और ना मौका देते हैं..!

– प्रेरणादायक सुविचार

श्रीमती रचना जयपाल सिंह
उपनिदेशक/ राजभाषा एवं प्रशासन

विपरीत परिस्थितियों में भी साहसी जवान

भारत देश की रक्षा के लिए विपरीत परिस्थितियों में भी अपने साहस और सोर्य का परिचय देते एक जांबाज जवान की कलम से ,-

थका नहीं हूँ भारत माँ की रक्षा करते करते।

पर थोडा खंडित हूँ, तेरा बेटा हूँ, घाटी पंडित हूँ॥

भारत के देश के दुश्मनों को एक एक करके करूँगा चिन्हित।

फिर अपने साहस और बल सब दुश्मनों को एक एक करके करूँगा दण्डित॥

भय नहीं मुझे इन मुट्ठी भर दुश्मनों से।

एक इंच भी नहीं जाने दूंगा अपने देश की जमीन से॥

भारत देश की रक्षा के लिए हर समय तैयार हूँ जल थल पर।

मैं रहूँ न रहूँ मेरा देश सुरक्षित रहे दुनिया के भूगोल पर॥

सर्दी की सर्द से बचने के लिए ओढ़ लिया हूँ तिरंगा।

गोलियों से छलनी कर दूंगा दुश्मन को अगर मुझसे लेगा पंगा॥

सुश्री अर्चना प्रजापति व.ले.प/जी.एस.टी.ए

अप्रिय शब्द पशुओ को भी नहीं सुहाते है – गौतम बुद्ध

कोविड-19 – एक वैश्विक महामारी या एक सीख

आज पूरी दुनिया कोरोनावायरस (कॉविड 19)जैसी महामारी से जूझ रही है। पूरी दुनिया कोरोनावायरस की वैक्सीन बनाने के लिए एकजुट होकर जोर शोर से चिकित्सा के क्षेत्र में काम कर रही है। वर्तमान में जारी विश्व स्वास्थ्य संगठन के नियमों जैसे हाथों को साबुन से बार-बार धोना, सामाजिक दूरी बनाना, मास्क पहनना और लॉकडाउन के निर्देशों का पालन करके कोरोना वायरस की रोकथाम बहुत हद तक की जा सकती है। ऐसे अधिकारी या कर्मचारी जो आवश्यक सेवाओं (जैसे विद्युत, चिकित्सा,खाद्य सामग्री इत्यादि)में हैं हमें उनका सम्मान करने के साथ-साथ हौसला भी बढ़ाना चाहिए। इस लेख में मैं अपना एक विशेष अनुभव साझा करना चाहूँगी कि दुनिया में हर चीज चाहे वह जीव जंतु या वन हमारी प्रकृति कोई भी चीज जो इस वातावरण में है वह एक लंबे समय के बाद अपने आप को रिन्यू (सुधार) अर्थात रिफॉर्म(नवीनीकरण, नया करना) चाहती है। अतः इस प्रकृति में सब को जीने का हक है, चाहे वह मनुष्य है या जीव-जंतु इसलिए इसलिए हमें सबके जीवन की रक्षा करनी चाहिए। इस समय पर बहुत से ऐसे वीडियो वायरल हुए हैं, जब हम लोग घरों मैं लॉकडाउन है और वन्य जीव जंतु सड़कों और हमारे घरों के आस-पास आकर स्वतंत्र और मनुष्य के बराबर प्रकृति एवं वातावरण का आनंद ले रहे हैं और प्रकृति को साझा कर रहे हैं। अतःअंत में मेरी सभी से यह विनम्र प्रार्थना है कि इस वातावरण में सब को जीने का हक है ,ये प्रकृति सभी की है इसलिए हमें जीव -जंतु वन सभी की रक्षा करनी चाहिए, अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो इसका परिणाम अति गंभीर होगा।

सुश्री अर्चना प्रजापति व.ले.प/जी.एस.टी.ए

नरम शब्दों से सख्त दिलो को जीता जा सकता है – सुकरात

नयी शुरुआत

धीरे धीरे लॉकडाउन की कड़ी खुलने वाली है
सबके चेहरे पे हँसी खिलने वाली है।
कोरोना ने बहुत कुछ दिखाया है।
कहीं हैवानियत कही इंसानियत दिखाई है।
कहीं उठक बैठक, कही दौडा दौड़ा कर मारा है।
जिंदगी की यह कड़ी कभी ना भुल जानेवाली है।
जिन्होंने जन्म दिया उनकी चिता के दर्शन ना कर पाना ना अग्नि दे पाना।
इसे दुर्भाग्य कहें या कमनसीबी या कोरोना का खौंफ।
निशब्द आंखें अपने आप नम हो जाती है।
चलो छोड़ो बीती बातें, करते हैं नयी शुरुआत
जिंदगी खुबसूरत है , करते हैं अत्मनिर्भर की बात।

श्री अंकुश बने
जी.एस.टी.ए./सी.सी.-2

गहरी नदी का जल प्रवाह शांत व गंभीर होता है – शेक्सपीयर

करोना क्या है? क्या है करोना?

जो एक छत के नीचे रहकर भी दूर रहना पड़ रहा है।
जो सबके मुंह पर लगाम लगा दें ।
जो सब रिश्ते-नाते तोड दे।
जो इन्सानियत को तोड़ दें।
जो आपस में एक-दुसरे से लड़ा दें।
जो बच्चों का बचपना छीन लें।
जो रोजगारों को बेरोजगारी की स्थिति पैदा कर दें।
जो आर्थिक स्थिति को बिगाड़ दे।
जो इंसानों को निगल लें।
जो बुजदिलों की तरह पीछे से वार करें।
फिर भी हम उसके साथ डटकर लड़ रहे हैं।
यहीं हमारी खासियत है।
जो कभी आसानी से हार नहीं मानते।
हम होंगे कामयाब एक दिन।
पुरा है विश्वास,हम होंगे कामयाब एक दिन।
अब एक ही नारा लगाना है
करोना को हर हाल हराना है।
ना की उससे डरना है।
देश को इस महामारी से बचना है।
जय हिन्द जय भारत

श्री अंकुश बने
जी.एस.टी.ए./सी.सी.-2

जिस तरह जौहरी ही असली हीरे की पहचान कर सकता है, उसी तरह गुनी ही गुणवान की पहचान कर सकता है – कबीर

मतभेद

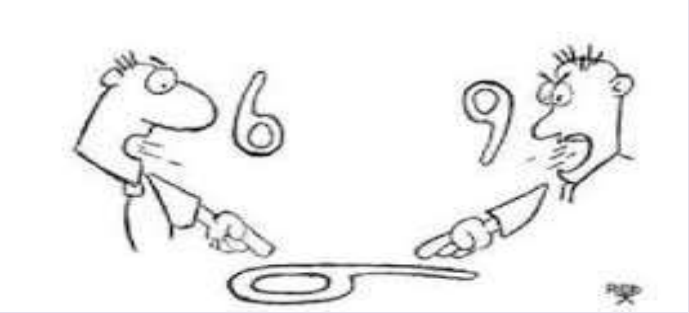

मानव संबंधों में संघर्ष और असंगति के प्रमुख कारणों में से एक मतभेद हैं। मानव मस्तिष्क प्रत्येक चीज़ पर राय बनाने के लिए ही प्रोग्राम किया गया है। हम चाहते हैं कि हमारी राय सुनी जाएं। हमारी राय हमें प्रिय हैं, वे हमारा प्रतिनिधित्व करते हैं और दुनिया को बताते हैं कि हम कौन हैं। हमारी पहचान हमारी राय पर निर्भऱ है। सामाजिक पदानुक्रम में हमारा स्थान इस बात से निर्धारित होता है कि कितने लोग हमारे विचार को मानते हैं। मतभेद से रिश्तों की दूरी बढ़ जाती हैं ।

मतेभेदों को कैसे संभालें ?

विचारों का अंतर दूसरों से पूछ सकता है। हमें पहले यह समझना है कि मतभेद जीवन-डिजाइन का हिस्सा हैं। जितने लोग इस दुनिया में हैं उतने ही मत या राय हैं। हम केवल रिश्तों को नुकसान पहुंचाए बिना इन मतभेदों को प्रबंधित करने का प्रयास कर सकते हैं। असहमति की अपरिहार्यता के दर्द को कम करने हेतु हमें इस जीवन-डिजाइन को अपना होगा ।

अपरिवर्तनीय अंतर

हम विपरीत दुनिया में रहते हैं और कुछ अंतर अपरिवर्तनीय हैं। सबसे बड़ी है- विचारधारा। विचारधारा के लंबे समय के सामाजिक परिणाम होते हैं और यह बहुत अधिक रक्त बहाव का कारण रहा है। जब यह धार्मिक राय और विश्वासों की बात आती है, तो जो लोग अलग-अलग आध्यात्मिक पथों का पालन करते थे, हालांकि यह मानते हुए कि हर धर्म का गंतव्य समान हैं, वे संघर्ष करते हैं यह मानते हुए कि एक रास्ता बेहतर है और दूसरा नीच है। ऐसे मामलों में कोई सुलह संभव नहीं है। हमें बस "जीना है और जीने देना है।"

समझौता

हम कुछ असंगत मतभेदों को समझौता करके सुलझा सकते हैं। समझौता करने में प्रत्येक को वह चीज मिलती है जो वे चाहते हैं, लेकिन सब कुछ नहीं। जब आप दूसरे व्यक्ति की पसंद और नापसंद को अपने पसंद-नापसंद जैसा ही महत्वपूर्ण मानते हैं, तो मन समझौता करना सीख ही जाएगा।

योग्यता पर ध्यान देना

मतभेदों को सुलझाने के लिए एक समाधान है जीवन के एक तरीके के रूप में योग्यता के आधार पर विचारों का मूल्यांकन करने का अभ्यास करना। "सबसे अच्छा विचार का जीत" यही सच होनी चाहिए। यह बहस से अहंकार को दूर रखेगा। हम योग्यता के आधार पर मतों का मूल्यांकन करेंगे और उस पर ध्यान नही देंगे कि यह किसने कहा है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप, आपका कनिष्ठ, शिक्षित व्यक्ति या कोई नापसंद व्यक्ति का मत है । हम व्यक्ति को विचार से अलग करते हैं। "राय" व्यक्ति से ज्यादा मायने रखती है। इसका मतलब है कि हम विचारों को विचारों के रूप में देखते हैं न कि व्यक्ति के आधार पर ।

परामर्श

मतभेद गंभीर रूप से संबंधों को खतरे में डाल सकते हैं। पूरी तरह बिग़डने के पहले परामर्श लेना बेहतर है। किसी भी क्षेत्र में कोई न कोई विशेषज्ञ होता है या कुछ ऐसा व्यक्ति होता है जिसका हर कोई सम्मान करता है। केवल एक तीसरा पक्ष ही एक अलग परिप्रेक्ष्य ला सकता है जिसे पहले नहीं देखा गया था। आम तौर पर लोग सोचते हैं कि वे अपनी सभी समस्याओं को स्वयं हल कर सकते हैं। ऐसा नही है। भावनाओँ के सामने तथ्यों की स्पष्टता प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है। हमें किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है जो दोनों पक्ष को सुनकर निष्पक्ष होकर भलाई के आधार पर परामर्श दे सके।

सर्वसम्मत निर्णय

जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र होते हैं जहाँ एकमत होने के लिए राय की आवश्यकता होती है। डूबने से पहले निर्णय लेना उचित है। उदाहरण के लिए जब हम एक टीवी खरीदते हैं तो हमें यह देखना चाहिए कि परिवार में हर सदस्य इसे पसंद करता है। निर्णय ज्यादातर अपरिवर्तनीय हैं और दीर्घकालिक प्रभाव निहितार्थ हैं। हमें अपरिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय निर्णयों के बीच के अंतर जानकर सही निर्णय लेना चाहिए ।

सीमांकन करना

कुछ विषय ऐसे है कि केवल एक व्यक्ति का निर्णय सबसे अच्छा होता है। उदाहरण के लिए निवेश के फैसले को उस व्यक्ति पर छोड़ दिया जाना चाहिए जिसको उसका विषय-ज्ञान हैं । विचारों में असहमति का दर्द हमारे गहरे लगाव के कारण होता है। विचारों की भिन्नता मुख्य रूप से विचारों का टकराव है। विचार जीवित रहना चाहते हैं और वे अपनी लड़ाई लड़ने के लिए हमारा उपयोग करते हैं। कभी-कभी, यहां तक कि जब हम जानते हैं कि दूसरों की राय सही या उपयुक्त नहीं है तो हमें चुप रहना चाहिए और यह उन्हें अपनी गलतियों से सीखने की अनुमति देता है। अन्यथा हमारे विचारों को तुरंत देने के बजाय सवालों के माध्यम से उनकी कमजोरी तक पहुँच सकते हैं ।

राय और मत के फूल हमसे बिना पूछे ही हमारे मन में खिलते हैं ।

- मूल्यों और सिद्धांतों के मामलों पर मजबूत विचारों की आवश्यकता है।
- हमें किसी भी चीज जिससे हमारे जीवन पर दीर्घकालिक प्रभाव हैं उसके बारे में खूब विचार करने की आवश्यकता है
- उन क्षेत्रों जो महत्वपूर्ण नहीं हैं उसके बारे में सहज रूप से विचार करना है और दूसरों को अपने अपने विचारों स्वीकार्य होने की संतुष्टि भी मिलनी चाहिए ।
- सबसे महत्वपूर्ण बात, हम विचारों को विचारों के रूप में देखना हैं न कि व्यक्ति के आधार पर ।
- मतभेद को पहचानेंगे हम बुध्दिमत्ता से,सह-अस्तित्व का मार्ग ढूँढेंगे परिपक्वता सहित ।

सुश्री वाणी विशालाक्षी
वरिष्ठ अनुवादक

माँ

सूरज ने अपना सारा प्रकाश समेटा
और अर्पण कर दिया उसे।
चंदा ने चांदनी समेटी
और भर दी उसकी झोली में।
आसमान भी झुक गया उसके आगे
और रख दी सारी असीमता
उसके चरणों में
अदृश्य शक्तियां भी नतमस्तक हो गई
उसके सामने।
लेकिन फिर भी कुछ नहीं रखा उसने अपने पास दे दिया मुझे
सूरज का प्रकाश, चंदा की चाँदनी, आकाश की असीमता और दिया
सागर भर प्यार।
वो मेरी माँ है।
वो मेरी माँ है।

राहुल कुमार वर्मा
क.अनुवादक/राजभाषा

ज्ञानी पुरुषो का क्रोध भीतर ही, शान्ति से निवास करता है, बाहर नहीं – खलील जिब्रान

घर

सुख-दुख के मंजीरों सा
यादों का पिटारा
पीढ़ी- दर- पीढ़ी की जिंदगियों का लेखा-जोखा
होता है घर।

बचपन, जवानी, बुढ़ापे का संगम
या किसी रहस्यात्मक तिलिस्म सा
होता है घर।

घर कभी छोटा या बड़ा
नया पुराना नहीं होता
घर तो सिर्फ घर होता है।

प्रेम की अल्पना से सजाना इसे
क्योंकि
जिनका नहीं होता है कोई घर
भटकते हैं वे दर-ब-दर ।

राहुल कुमार वर्मा/

क.अनुवादक/राजभाषा

कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो निर्धन हो जाता है – चाणक्य

वो'विष्णु'.....मैं'विषाणु'

कैद हुए घरों में दरवाजे बंद,चेहरे पर मास्क चढ़ा है,
माथे पर शिकन आंखों में तड़प, हृदय में आतंक भरा है।
पर हर अपनों को छोड़ घरों ,में हम अस्पतालों में डटे हैं,
कभी योद्धा तो कभी देवदूत बन, डॉक्टर कर्तव्यपथ पर डटे हैं।

मिला कोरोना एकदिन हमको, हमने हंसकर दूर भगाया,
हुआ प्रभावित हमसे कोविड वो, दोस्ती का हाथ बढाया।
बातों बातों में पूछा उससे, क्यों दुनिया को इतना सताते हो?
सब भाग रहे डरकर तुमसे और तुम उनको दौड़ाते हो।

बड़ी शालीनता से जवाब मिला ये, स्वाभिमानी हम यूँ ही कहीं ना जाते हैं ,
जो नियम तोड़े बाहर आए, हम बस उन्हें गले लगाते हैं।
मैंने पूछा मर रहे हैं लोग यहां और तुम खुद को स्वाभिमानी बताते हो,
टूट रहे हैं लोग, थम गया संसार और तुम मंद मंद मुस्कुराते हो।

मुस्कुराते हुए कहा उसने भाग रहे थे सदियों से तुम, हमने तुम्हें अल्पविराम दिया है।
कुछ सपनों की बलि चढ़ा कर प्रकृति को विश्राम दिया है।
अपनी महत्वाकांक्षाओं की धार से, तुमने प्रकृति को लहूलुहान किया है,
हमने तो बस आतंक दिखाकर मानव जाति को सावधान किया है।

समझो अगर इशारों को तो सीख नहीं वरदान है हम,
सुधार लिया खुद की भूलों को तो हम नहीं भगवान से कम।
सख्ती आई मेरे शब्दों में, मैंने भी पलटवार किया ,
तीखे शब्दों की वाणी से कोरोना पर प्रहार किया।

इश्वर जीवन देते हैं तुम प्राणों को हरते हो, अहंकार से भरे हुए तुम खुद को भगवान कहते हो।
कटु सत्यों को शब्द बनाकर उसने आईना मुझको दिखलाया।
जीवन का एक पाठ सिखाने आक्रामक हो उसने समझाया।
जीव- जंतु, प्रकृति के संतुलन को, मानव ने सर्वनाश किया,

ईश्वर ने मानव का ध्यान रखा मानव ने हमारा विनाश किया।
हम निरीह प्राणी उनके बच्चे, उनकी आंखों के तारे भी हैं।
वह रक्षक सिर्फ तुम्हारे नहीं हैं हमारे भी हैं।
यह ब्रह्मांड परमपिता का, उनके नन्हे अणु है हम,
सर्वशक्तिमान 'विष्णु'वो उनकी संतान 'विषाणु' है हम।

सुश्री रीता सिन्हा
स.ले.प.अ/आ,प्रा.लेप

डूब की तरह छोटे बनकर रहो . जब घास -पात जल जाते है तब भी डूब जस की तस बनी रहती है – गुरु नानक देव

क्यों कहता है इंसान.....

ना जमीन सिमटी है ना सिकुड़ा है आसमान,
फिर क्यों कहता है इंसान दुनिया छोटी हो गई।
दूरदराज हो या कोई भी प्रदेश,
अपना देश हो या विदेश,
चाहे जहां भी है मित्र एवं परिजन,
घनी आबादी या निर्जन,
बातें करना है आसान,
पर पड़ोस में रहता है नहीं है ज्ञान,
फिर क्यों कहता है इंसान दुनिया छोटी हो गई।
फेसबुक और ट्विटर की दोस्ती,
ना सानिध्य का आनंद ना अल्हड मस्ती,
एस .एम .एस के ज़माने में पत्र कौन लिखता है ,
बधाई के रूप में स्माइली भेजता है,
खेल का मैदान भूल गए,
वीडियो गेम में घमासान,
फिर क्यों कहता है इंसान दुनिया छोटी हो गई।

राकेश कुमार सिंह
व.ले.प/सी.शु.प्रा.ले.प

ईश्वर के हाथ देने के लिए खुले है . लेने के लिए तुम्हे प्रयत्न करना होगा – गुरु नानक देव

माँ तो बस माँ होती है

माँ तो बस माँ होती है, वही धूप होती है वही छाँव होती है। माँ तो बस.....
नव महीने वो गर्भ में रखती है, तब बच्चे को जन्म देती है।
यही उसके दिल की अरमां होती है, माँ तो बस.....
बच्चे को सूखे पर सुलाती है, खुद भींगे पर सो जाती है।
बच्चे के थोडे से दुःख से भी घबराती है, रोती है बिलखती है।
माँ तो बस माँ होती है।
आठ से नव महीने गोद में ढोती है, खेलाती है, फिर तकिया लगाकर बैठना सिखाती है।
इसके बाद ऊँगली पकडकर धीरे-धीरे चलना सिखाती है। माँ तो बस...
बच्चे की ममता में अपना पूरा दिन गुजार देती है,
ळाख थकी होने पर भी चेहरे पर सिकन नहीं आने देती है,
वह बच्चे को खिलाती है, फिर सुलाती है तब सोती है, माँ तो बस..
माँ बच्चे की पहली गुरू है यहीं से उसकी संस्कारिक शिक्षा शुरू है,
गलती पर डाँटती है, समझाती है, पुचकारती है, फिर सही दिशा दिखाती है।
माँ तो बस माँ होती है।
बच्चा जब बडा होता है, पढ-लिखकर अपने पैरों पर खडा होता है,
बच्चे की हर छोटी सी खुशी में वो खुश होती है, माँ तो बस..
वह बच्चे को ब्याहकर बहु लाती है,
पढी लिखी नौकरीवाली बहु पाकर इतराती है.
लेकिन उसी बहु को चाय बनाकर देती है और बर्तन धोती है,
तो मन ही मन बहुत रोती है, माँ तो बस...
भाई मेरा आपको निवेदन है, माँ को कभी वृद्धाआश्रम का मुँह न दिखाना,
सुबह शाम हर पल माँ का आर्शीवाद है पाना, क्योंकि
माँ है तो घर है, घर में लक्ष्मी है, रौशनी है, ज्योति है।
माँ तो बस माँ होती है।

गौरव कुमार /एम.टी.एस/अभिलेख अनुभाग

भोजन और जीवन

भोजन हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। पर जितनी विभिन्नता भोजन में है, कुछ उतनी ही इसे ग्रहण करने की विधि और नियमों में भी है। प्राचीन काल से अनुभव एवं प्रयोगों द्वारा भोजन की सही विधि, मात्रा और इसके अवयवों का निर्धारण करने का प्रयास हो रहा है। भले ही इस प्रक्रिया में कितने ही सिद्धद्धांत बने हों पर , उनमें कुछ ना कुछ समानता अवश्य है।

योग कहता है कि आपका शरीर सब जानता है। आपको अपने शरीर की सुननी होगी और उसे ही मानना होगा। यह सही है पर कठिन है। इस साधारण सच को पार करना ही मुश्किल है। क्योंकि लंबे समय तक गलत आदत और गलत जानकारी से कई मुश्किलें खड़ी हो जाती है। इससे शरीर की प्राकृतिक मांग कम हो जाती है। ऐसे में व्रत या भोजन की मात्रा कम करना ही एकमात्र उपाय रह जाता है, ताकि शरीर सही मांग करने लगे।

जानवरों को तो प्राकृतिक भूख लगती है। वे शरीर की भोजन के मांग का पूरा ध्यान रखते हैं, लेकिन हमेशा जरूरत से कम खाते हैं। जानवरों को जब यह लगता है कि शरीर या पेट में कुछ गड़बड़ है तो वे उपवास कर लेते हैं। जबकि मानव यदि स्वस्थ नहीं है तो भी खाने की सोचता है और ज्यादा खा जाता है। बल्कि इसके उल्टा करें और कम खाएं या नहीं खाएं तो शरीर जल्दी स्वस्थ और सामान्य हो जाएगा। शरीर कभी जरूरत से ज्यादा की मांग नहीं करता है इसलिए अगर इसे ज्यादा दिया जाए तो वह इसे स्वीकार नहीं करता औए अस्वस्थ हो जाता है।

हमारा शरीर सही मांग करे इसके लिए जरूरी है कि हम शरीर और इसके अंगों को कुछ आराम करने दें। यदि भोजन हमारी स्थितियों के अनुकूल नहीं है तो भी हमारा शरीर इसे ग्रहण नहीं करेगा। हमें अपने आहार के बारे में वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना चाहिए। जैसे कि शारीरिक मेहनत करने वाले के लिए अलग प्रकार का भोजन, बैठ कर काम करने वाले के लिए अलग भोजन इत्यादि। यदि यह अध्ययन सटीक हो गया तो हम बहुत कम मात्रा में भोजन करके भी स्वस्थ रह सकते हैं। अत: हमें स्वस्थ जीवन जीने के लिए भोजन की आवश्यकता को पूरा करते समय इसकी विभिन्नता और मात्रा का पूरा ध्यान रखना चाहिए। संतुलित आहार लें, विभिन्न प्रकार का भोजन ग्रहण करें, समय से खाएं अर्थात जब ज़ोरों की भूख लगी हो और उतना ही खाएं कि थोड़ी सी भूख बची रह जाए।

राकेश कुमार सिंह /व.ले.प/सी.शु.प्रा.ले.प

मनुष्य की इच्छाओ का पेट आज तक कोइ नहीं भर सका है –वेदव्यास

बदलता जमाना

एक था जमाना ।

जीवन था सुहाना।।

न थी कोई परेशानी।

न थी कोई बीमारी।।

सीधे-सादे थे लोग।

नही होते थे रोग।।

खेतो में होती थी हरियाली।

लोगों मे रहती थी खुशहाली।।

जीवन था बहुत सरल।

खेतो में थी अच्छी फसल।।

न था कोई फैसन।

न थी कोई टेंशन।।

बदल गया जमाना।

भाई-चारा हो गया पुराना।।

जिन्दगी में आ गया फोन।

बगल में बेठै आदमी को जाने कौन।।

न रहा कोई रिश्ता न रहा कोई प्यार।

बस हर समय रहते है लड़ने को तैयार।।

अपने बड़े-बुढो की करो इज्जत।

तभी तो चमकेगी किस्मत।।

बदल गया जमाना।

ये रिश्ता तो है निभाना।

बलराम राणा, डी.ई.ओ

चिडियाँ पूछती है .....

हे मानव
आलीशान घर बनाया
घर में पेड क्यों नहीं लगाया?
तू ने कहाँ प्रकृति को बचाया
कोरोना के डर से तू घर में बंदी
ऐसे मुझे मिली आजादी
तू ने कहाँ प्रकृति को बचाया ?

श्रीमती ममता पै, व. ले. प /अभिलेख

सेना में जवान, खेतों में किसान।

हम सब करते है इनको सलाम ।।

फौजी

भारत एक विशाल देश है। जिसमे बहुत सारे लोग सेना में सेवा करते है। जब भी भारत देश पर या देश के अन्दर कोई आपदा आती है, तो एक सेना का जवान हमारी रक्षा करता है। जब एक जवान सीमा पर तैनात होता है तो उसे पता होता है कि कही से भी गोली आकर उनके सीने पर लग सकती है। परन्तु वह इन सब चीजो की परवाह किए बिना सीमा पर खड़ा रहता है और हमारी रक्षा करता है। चाहे कितनी वर्षा हो, सर्दी हो, गर्मी हों, वह देश के सेवा के लिए तत्पर खड़ा रहता है। लेकिन बहुत सारे लोग ऐसे है जब कोई जवान किसी मुसीबत में हो उसकी कोई सहायता नहीं करते हैं न ही उनकी इज्जत करते हैं। हमें यह सोच बदलनी होगी और अपनी सेना के जवानों की इज्जत करनी चाहिए।

किसान

किसान भारत के हर कोने में मौजूद है जब वह कोई फसल पैदा करता है तो वह यही सोचता है कि मेरी फसल अच्छी पैदा हो जिससे मैं अपना और अपने परिवार का जीवन यापन कर सकूँ। लेकिन किसान की खेती एक सट्टे बजार की तरह होती है जब किसान को पानी की जरूरत होती है तो पानी नहीं मिलता न कोई बारिश होती है और जब किसान किसी तरह कोशिश करके फसल तैयार करता है तो खुले आसमान से कोई भी आफत आकर किसान की फसल खराब हो जाती है। और फसल के साथ-साथ किसान भी बर्बाद हो जाता है। जिससे आए दिन किसान की आत्महत्या की घटना घटित होती रहती है। इसलिए किसान और जवान को सम्मान देना चाहिए।

जय हिंद।

बलराम राणा, डी.ई.ओ

खुदा एक दरवाजा बंद करने से पहले दूसरा खोल देता है, उसे प्रयत्न कर देखो – शेख सादी

कलसुबाई शिखर ट्रेक यात्रा वृतांत

कलसुबाई पश्चिमीघाट में एक पर्वत शिखर है, जो भारत के महाराष्ट्र राज्य में स्थितहै। इसका शिखर 1646 मीटर या 5400 फीट की ऊँचाई पर स्थित महाराष्ट्र का सबसे ऊँचा स्थानहै।पर्वत श्रृंखला कलसुबाई हरिश्चंद्रगढ़ वन्यजीव अभयारण्य के भीतर स्थित है । यह सालभर में एवीड ट्रेकर्स, कलसुबाई मंदिर भक्तों और वन्य जीव उत्साही लोगों द्वारा समान रूप से दौरा किया जाता है। कलसुबाई पीक एक छोटा पठार है जहाँ स्थानीय देवी कलसुबाई का एक छोटा मंदिर है। शिखर पर से पास के किलों और भंडारडारा डैम का बहुत ही मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

कलसुबाई पीक पर जाने का सबसे अच्छा समय - मानसून ट्रेक के लिए जून से अगस्त, फूलों की ट्रेक के लिए सितंबर से अक्टूबर, नवंबर से मई रात की ट्रेक की सिफारिश की जाती है।मई अंत के दौरान आप पूर्व-मानसूनी बादलों के कंबल को शिखर से नीचे देख सकते हैं।मानसून के दौरान कलसुबाई पीक कि पूरी जगह कोहरे से ढकी होती है और माउंट कलसुबाई में हवा बहुत तेज होती है।कलसुबाई ट्रेकिंग का अनुभव तीनसीढ़ी हैं जो स्थानीय लोगों द्वारा माउंटकलसुबाई शिखर तक ट्रैकिंग मार्ग बनाने के लिए स्थापित किए गए हैं।

शिखर कलसुबाई ट्रेक करने के लिए मैंने अपना ट्रेक रजिस्ट्रेशन“भटकना”ग्रुप से किया। जिसका मुंबई में पिक-अप पॉइंट दादर स्टेशन के पास था ।वहां से निजी वाहन द्वारा 7 घंटे के सफ़र के बाद सुबह 4 बजे हमारा वाहन बारी बेसगाँव पंहुचा। वहाँ पर ग्रुप के द्वारा नाश्ते और ट्रेक के लिए तैयार होने का प्रबंध गाँव में ही किया गया। बेसगाँव में सुबह नाश्ता करने के बाद पूरे ग्रुप ने ट्रेक शुरू किया। कलसुबाई ट्रेक को पूरा करने में 3 से 4 घंटे तक का समय लगता है,

हाइकिंग ट्रेल बारी गांव से 6.6 किमी दूर है। मानसून के दौरान कलसुबाई ट्रेक के लिए बहुत से ट्रेकर्स सप्ताहांत पर आते हैं सीढ़ी सेक्शन पर भीड़ होती है, ऊपर से देखने को भी नहीं मिलता है क्योंकि पूरा पहाड़ घने कोहरे में ढंका रहता है।रास्ते में कुछ छोटी झोपड़ियाँ हैं जो निम्बूपानी, मैगी, चाय, प्याज भाजी बेचती हैं।वें ट्रेक को समाप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैंक्योंकि वे अंतराल के बाद स्नैक्स और रिफ्रेशमेंट प्रदान करके ट्रेकर्स को हाइड्रेटेड औरऊर्जा परअच्छा रखते हैं।

मानसून के दौरान पीक कलसुबाई पहुचने के बाद हमें वहाँ पर बहुत ही तेज हवा का सामना करना पड़ा, क्योंकि उस ऊंचाई पर हवा की गति काफी तेज होती हैपीक पर पहुचने के बाद पुरे ग्रुप ने ढेर सारी मस्ती की, नाश्ता किया और फोटो सेशन किया।कलसुबाई पीक ट्रेक शरीर को काफी थका देने वाला हो सकता है।लेकिन ट्रेक के दौरान मिलने वाले मनोरम दृश्य आपकी थकान को हर लेते है।तेज हवाओं के साथ मिली हुई बारिश की फुहारें आपको वो आनंद का अनुभव देंगी कि आप थकान महसूस ही नहीं करेंगे।

ट्रेक को सफलता पूर्वक पूरा करने के बाद हमारा ग्रुप लौटने लगा और पुरे ग्रुप को वापस बेसगाँव तक पहुचने में करीब 2 घंटे का समय लगा।वापस बेसपर पहुचने के बाद ग्रुप के भोजन कि व्यवस्था गाँव में ही की गई थी।भोजन के बाद पूरा ग्रुप वापस निजी वाहन से वापस अपने गंतव्य मुंबई के लिए रवाना हुआ ।इस प्रकार एक शानदार औरखुबसूरत यात्रा का समापन हुआ।

कलसुबाई शिखर ट्रेक मेरे जीवन के एक शानदार और यादगार ट्रेक में से एक है।इस यात्रा में मैंने बहुत सारे ट्रेकर्स से दोस्ती कि और बाद मैंने उनके साथ महाराष्ट्र के कई दुसरे ट्रेक जैसे अंधार वन ट्रेल, विजापुर फोर्ट ट्रेकऔरमुंबई नाईट साइकिलिंग भी किया।

आदित्य कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
आयकर प्राप्ति लेखापरीक्ष

बुरे आदमी के साथ भी भलाई करनी चाहिए –कुत्ते को रोटी का एक टुकड़ा डालकर उसका मुंह बंद करना ही अच्छा है –शेख सादी

मैं जो चाहता हूँ...

सच बोलता हूँ तो ढगा जाता हूँ,
झूठ बोलता हूँ तो धरा जाता हूँ।
सोचा चुपचाप बैठूँ थोड़ी देर, कुछ न कहूँ,
अब ख़ामोश मेमने-सा मैं भेड़ियों से घिरा जाता हूँ।

इंसानों ने गढ़ रखे हैं सब मुहावरे जानवरों पर,
बहुत हो गया मैं अब उनकी आँखों में हया चाहता हूँ।
हरकतों से अपनी अब जानवर ही हो गये हैं वो,
कोई बचा हो अब भी इंसान तो मैं उसका पता चाहता हूँ।

यूँ तो वश नहीं हमारा अपनी क़िस्मत पर मगर,
हो सका तो मैं बनना ख़ुदा चाहता हूँ।
ये नहीं कि ख़ुदा बनकर पुजा जाउँ,
बस कैसे भी इंसानी जात से होना दफा चाहता हूँ।

सच बोलने की क़ीमत बहुत चुका ली मैंने,
झूठों को भी मिले अब सज़ा चाहता हूँ।
ज़िंदगी तेरे नाटक में अब नाटक नहीं होता मुझसे,
जल्दी से गिरे ये मंच का परदा चाहता हूँ।

कल अख़बारों में मेरे नाम पर सियासत होगी,
हो जाने दो मैं भी इस बार हल्ला चाहता हूँ।
माफी नहीं मांगूंगा इस बार मैं सच बोलने की,
चाहो तो मुझे दे दो अब मैं क़ज़ा चाहता हूँ।

– कुमार सौरभ
आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक/अभिलेख अनुभाग

पिता का जीवन

मेरी किस्मत की ळडखडाई कस्ती को आपने ही संभाला,
आदमी के लिबास में भगवान हो, आपने ही मुझे पाला।
हालत कर ली फकीरों जैसी, कभी खुद पे तरस न खाया,
खुद रखते हो टूटा फोन, मेरे लिए महँगा फोन लाया।
करते हो हमेशा खुश रहने का नाटक, कभी वक्त पे खाना नही खाया।
अपने खून पसीने से है एक प्यारा आशियाना बनाया।
जो भी मांगा मैने, आपने हँस के दिया,
मेरे भविष्य की चिंता में अपना सबकुछ न्योछावर किया।
तपती दोपहरी में काम करके अपनी चमडी को जलाया,
मेहनत का खा के जीना आपने ही तो सिखाया।
अँधेरो से निकालकर मुझे, जगमगाती दूनिया से रूबरू कराया,
रौशन मंजिल का रास्ता आपने ही तो दिखाया।
आपका यूँ चले जाना हमसब को झकझोर गया,
थे कितने अरमान सजाए पल-भर में सब तोड गया।
मेरी पहचान आप से थी, था आप से पूरा परिवार,
सुनी पडी हैं गलियाँ रास्ते, है सूना पडा घर-द्वार।

राकेश रौशन
डी.ई.ओ/प्रशासन

आपबीती

बददुआओं को मैंने यूँ जज़्ब कर लिया,
अपने सीने को मैंने कब्र कर लिया।
भूल से भी न मेरे दिल से आह निकले,
नुस्खे, उपाय, प्रबंध मैंने सब कर लिया।

लोग कहते हैं अतरंगी है ये लड़का,
जाने ये हुनर पैदा कब कर लिया!
इक सवाल उठता है हर वक़्त मेरे भी मन में,
क्यूँ इस दुनिया ने मुझे बेअदब कर दिया?

वाह री दुनिया! क्या कमाल दस्तूर है तेरा,
मैंने सवाल क्या पूछा, मुझे ही जवाब तलब कर दिया!
केंचुओं को कुचला और सांपों को पाला,
बेवकूफ़ों तुमने ये क्या ग़ज़ब कर दिया!

मेरे मौला मेरी एक ख़्वाहिश पूरी कर दे,
इन्हें अक़्ल बख़्श दे या फिर मुझे जाहिल कर दे।
मसला ये नहीं कि मैं परेशान हूँ इस जहान से, बल्कि,
तुझसे सवाल है क्यूँ मुझे इनके पशेमानी का सबब कर दिया?

कुमार सौरभ
आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक/अभिलेख अनुभाग

जो जैसा शुभ व अशुभ कार्य करता है, वो वैसा ही फल भोगता है – वेदव्यास

रिक्शावाला

मैं रिक्शावाला मैं रिक्शावाला ।

बांद्रा हो या कुर्ला मैं नहीं आनेवाला

मैं रिक्शावाला मैं रिक्शावाला ।

छुटे पैसों की हो छनछन या भाडे की हो अनबन।

बीच रास्ते में यात्री को छोड के मैं हूँ भागनेवाला।

मेरी रिक्शा हैं हसीन उसे है मुझे संभालना

यह गढ्ढे वाले रास्तों मे मैं नही लानेवाला।

सुबह मस्टर के लिए कर्मचारी भागें,

रिक्शा के लिए मेरे चरण पकडे।

लेकिन मैं हुँ महाराजा चूपचाप देखनेवाला।

बच्चें हो या महिला, जवान हो या बुढिया।

मैं नही तरस खानेवाला।

कमर-दर्द हो या हो पीठदर्द,

या ना हो चलने की ताकत।

लेकिन मैं नही मानवता दिखानेवाला।।

तपती धूप हो या बारिश की बौछार,

लेकिन मैं ना मानूंगा हार।

अकेला ही हूँ मैं मेरी रिक्शा में सवार।

नही किसी को लेनेवाला।।

ऐसा है ये हम जैसों का हाल

ना पूछे बसवाले न पूछे कोई और।

बस जिंदगी कट जाएगी जाने आने में,

ऑफिस और घरद्वार।

हम हैं बेबस, बेसहारा, लाचार।

ना चला सकते बाईक, स्कूटर या कार।

तुम्हें कोस कर क्या होगा भला..

मैं रिक्शावाला मैं रिक्शावाला

श्रीमती मनीषा कदम
पर्यवेक्षक

कु. स्वर्णिम पुत्र
सुश्री रीता सिन्हा/स.ले.प.अ/आ,प्रा.लेप

दो जून की रोटी

हाय ये रोटी हाय ये रोटी,
नहीं होती रोटी तो जग रोती
अगर मिल जाये तो बोझ अरमानों की ढोती।

सुबह से लेकर शाम तक पापा करें जुगाड़ रोटी का,
लोरी के बदले में माँ राज बताती रोटी का,
लल्ला मेरे पढो-लिखो दुःख दूर होगा रोटी का
कहीं रहोगे मस्त रहोगे, आह न होगा रोटी का।

उनकी दुआंएँ मेरी परिश्रम, भगवान ने दे दी दो रोटी,
मिल गई रोटी तब भूख मिटी फिर जागी अरमां सोती।
साथ में होते मम्मी-पापा, बहन हमदम भी साथ होती,
मगर पाँच को मिलेगी कैसे पास सिर्फ है दो रोटी।

रोटी के चक्कर में हाय मैंने अरमानों की गला घोटा....
हाय ये रोटी, हाय ये रोटी।

राकेश रौशन-डी.ई.ओ
प्रशासन

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के सच्चे आभूषण होते है –तिरूवल्लुवर

कुमारी अद्विका
सुपुत्री सीमा हिरेबेट, स.ले.प.अ

शहर

ज़िंदगी की तलाश में शहर को आए,

फिर गाँव के रास्ते यह भीड़ कौन है।

तुमने कहा था ना कि, सुकून का सारा साजो-सामान है तेरे शहर में,

फिर तेरे निकास की सड़कों पर बेचैन ये भीड़ कौन है?

संसाधनों को छिन कर गाँवों से,

तुमने जो बाज़ार बनाये ये शहरों के,

उस बाज़ार की चमक बेचकर,

तुमने जो भीड़ बढ़ाये ये शहरों के,

गाँवों की वीरानगी के मलवों पे,

तुमने जो नींव बसाये ये शहरों के,

आज क्यों हिली है बुनियाद तेरी,

और तेरी शहरों से पलायन को मजबूर ये भीड़ कौन है?

जिसने खो कर जुगनू अपनी तेरे शहर का दीपक जलाया था,

आज वही बेगानों की तरह तेरे सड़कों पर रोती फिर रही,

तुम चाहते तो थोड़ा संसाधन भी बाँट सकते थे,

एक स्कूल, एक अस्पताल, एक फ़ैक्टरी मेरे गाँव में भी डाल सकते थे,

हमारा गाँव भी जगमगाता सड़कों और रोजगारों से,

बस इतनी-सी भविष्य की आस तो दे ही सकते थे,

मिटता अंधेरा, नाउम्मीदी, अशिक्षा, और बेरोज़गारी मेरे भी गाँव से,

बस इतना-सा अपना प्रकाश तो बाँट ही सकते थे।

सलामत रहती बुनियाद भी तेरे शहर की,

छुट्ता भी ना मेरा गाँव का सुकून,

न होती ये दुरी, न होता ये भीड़, और न ही होता ये सवाल...

रोती, बिलखती, चिल्लाती ये भीड़ कौन है???

श्री राजीव/अभिलेख

लॉकडाउन में आयोजित प्रशिक्षण

कोविड-19 के कारण लॉकडाउन घोषित किया गया था और कार्यालय सीमित कर्मचारियों के साथ काम कर रहे थे। लेकिन इस कार्यालय ने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निम्नलिखित प्रशिक्षण का सफलतापूर्वक आयोजन किया और सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए परीक्षाओं का भी आयोजन किया:

आयोजित प्रशिक्षण:

क्रमांक	प्रशिक्षण का नाम	प्रशिक्षण का तरीका	उम्मीदवारों की संख्या	टिप्पणियां
1	लेखापरीक्षा के विभिन्न चरणों में प्रलेखन	एमएस टीम्स	14	श्री सुंदर रामकृष्णन , वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ आर.टी.आई को संकाय के रूप में आमंत्रित किया गया था
2	राजस्व लेखापरीक्षा परीक्षा 20/07/2020 से 08/08/2020 तक	एमएस टीम्स	35	इस कार्यालय, अहमदाबाद , जबलपुर, एजी (लेखापरीक्षा) - I, एजी (लेखापरीक्षा) -II, सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड, रक्षा लेखापरीक्षा, पश्चिम रेलवे और शिपिंग के उम्मीदवार इस प्रशिक्षण में शामिल हुए
3	एसएएस प्रारंभिक परीक्षा 17/8/2020 से 21/08/2020	एमएस टीम्स	21	इस कार्यालय और रक्षा लेखापरीक्षा, पुणे के उम्मीदवारों ने प्रशिक्षण में भाग लिया

आयोजित परीक्षाएँ

क्रमांक	परीक्षा का नाम	उम्मीदवारों की संख्या	पत्रों की संख्या	टिप्पणियां
1	लेखापरीक्षकों के लिए विभागीय पुष्टि	4	3	
2	वरिष्ठ लेखापरीक्षकों के लिए प्रोत्साहन परीक्षा	32	1	इस कार्यालय के उम्मीदवारों के साथ आर.टी.आई, जयपुर में प्रतिनियुक्ति पर एक उम्मीदवार जयपुर से परीक्षा में उपस्थित हुए.
3	एसएएस प्रारंभिक परीक्षा	20	2	इस कार्यालय में कार्यालय के उम्मीदवारों के साथ कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ए)-I, महाराष्ट्र , मुंबई के एक उम्मीदवार परीक्षा में उपस्थित हुए तथा रक्षा लेखापरीक्षा, पुणे के एक उम्मीदवार पुणे से उपस्थित हुए.

सह्याद्रि परिवार की ओर से कार्यालय के सभी सेवानिवृत्त सदस्यों को सेवामुक्त जीवन की शुभकामनाएँ

क्र.सं	श्री/ श्रीमती	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	श्री	जोसेफ के.पी	व.ले.प.अ.	30-04-2019
2	श्री	दास बरुण कुमार	व.ले.प.	31-05-2019
3	श्रीमती	सरस्वती वल्ली	निदेशक	31-05-2019
4	श्री	जॉय के.ए.	व.ले.प.अ.	31-05-2019
5	श्री	नायर के.ज.एस.	व.ले.प.अ.	31-05-2019
6	श्री	राफेल जोस	व.ले.प.अ.	31-05-2019
7	श्रीमती	रेमा यू.पिल्लै	व.ले.प.अ.	31-05-2019
8	श्री	सावंत एस.एस.	ब.का.क.	30-06-2019
9	श्री	कुराडे बी.पी.	ब.का.क.	31-07-2019
10	सुश्री	संज्योत गोरे	स.ले.प.अ.	20-08-2019 (स्वै.से)
11	श्री	ए.सी.रंदीवे	पर्यवेक्षक	03-09-2019(स्वै.से)
12	श्रीमती	जे.वी. मेनन	व.ले.प.	17-10-2019 (स्वै.से.)
13	श्री	गायकवाड़ एच.जे	व.ले.प.	31-12-2019
14	श्री	जी.जी.चुदासमा	व.ले.प.अ.	26-02-2020 (स्वै.से.)
15	श्री	कुंभला.जी.के,	व.ले.प.अ.	30-04-2020
16	श्री	कुऱटे एच.टी.	ब.का.क.	31-05-2020
17	श्री	सुर्वे .सी.जी.	ब.का.क.	31-05-2020
8	श्री	उत्तेकर एस.के.	ले.प	31-05-2020
19	श्री	ऊके के.एन.	पर्यवेक्षक	31-08-2020

श्री नरेश पुजारी , स.ले.प.अ.
(निधन : 25.09.2020)

श्री एस.वी.शिंडे, ब.का.क.
(निधन : 04.06.2020)

मृत्यु सत्य है और शरीर नश्वर हैं,
यह जानते हुए भी अपनों के जाने का दुःख होता हैं
भगवान उनकी आत्मा को शांति दें
भावभीनी श्रद्धांजलि

वृध्दि विकास परब

(सौ. विनया विकास परब, पर्यवेक्षक,

आ.प्रा.ले.प./आर.पी.एस.),

<u>मुखपृष्ठ</u>

कोरोनोवायरस युद्ध के नायक डॉक्टर, नर्स, पुलिस, स्वच्छता कार्यकर्ता सहित कई कार्यकर्ता हर दिन गंभीर बाधाओं को तोड़ रहे हैं। अपनी सुरक्षा को खतरे में डालकर इस युद्ध को जीतने हेतु ल़ड रहे भारत के सुरक्षा स्तंभ की तरफ कृतज्ञता की प्रस्तुतिकरण है इस पत्रिका का मुखपृष्ठ ।

<u>अंतिम पृष्ठ</u>

लॉकडाउन ने जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल दिया है। वर्क फ्रम होम और ऑनलाइन क्लॉसस ने घर को बना दिया पिंजरा और हमें बंदी । अंतिम पृष्ठ में महामारी के कारण घर में बंद लोगों की मानसिक अवस्था का अद्भुद चित्रण किया गया है ।

मुखपृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ की दोनों कृतियाँ हमारे कार्यालय की श्रीमती विनया परब की सुपुत्री सुश्री वृध्दि परब द्वारा बनाई गई है । हमारे कार्यालय की तरफ से इस उत्कृष्ट कृति के प्रति आभार ।

वक़्त वक़्त की बात है। वक़्त सबका आता है।
सितम्बर
ONLINE SCHOOL TIMETABLE